श्री भगवतीसूत्र भाग प्रथम (श. १ उ. १--५) की

विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
१	मंङ्गलाचरण	१–३२
२	प्रथम उद्देशककी अवतरणा	३३–३५
३	"विआहपन्नत्ती" शब्दका अर्थ	३६–४२
४	मङ्गलाचरणकी आवश्यकता	४३–४६
५	अर्हदादि नमस्कार विचार	४७–६०
६	पूर्वपश्चान्नमस्कार चर्चा	६२–६६
७	ब्राह्मीलिपि नमस्कार विचार	६७–७०
८	मङ्गलाचरणावश्यक्तता चर्चा	७१–७२
९	विषयादि अनुबन्ध चतुष्टय चर्चा	७३-७५
१०	दस उद्देशकार्थ संग्रहगाथाका अर्थ	७६–७८
११	भावश्रुत नमस्कार	७९–८०
१२	राजगृहनगर और श्रेणिकराजका वर्णन	८१–८२
१३	श्री महावीरस्वामीका वर्णन	८३-१२८
१४	श्री गौतमस्वामीका वर्णन	१२९–१३८
१५	श्री गौतमस्वामीका जातश्रद्धादि विशेषणोंका वर्णन	१३९–१४४
१६	'से' (अथ) शब्दकी व्याख्या	१४५–१४६
१७	'भदन्त' शब्दकी व्याख्या	१४७
१८	'चलमाणे चलिए' इत्यादि नवपदकी व्याख्या	१४८–१६७
१९	गौतमस्वामीके नव प्रश्न करनेका कारण	१६८–१७०
२०	नवपदों के नानार्थादिका कथन	१७१–१७२
२१	नानार्थादि के विषयमें चतुर्भङ्गी	१७३–१७५
२२	प्रश्नसूत्रमें भङ्गद्वय ग्रहणका कारण	१७६
२३	'उत्पन्नपक्षस्य' शब्दकी व्याख्या	१७७–१७९
२४	'चलमाणे चलिए' इत्यादि पदकी व्याख्या	१८०–१८४
२५	"विगतपक्ष" शब्दकी व्याख्या	१८५–१८७
२६	चलनच्छेदनादि प्रश्नका कारण	१८८–१९०

२७	नैरयिकोंकी स्थिति आदिका कथन	१९१–२०७
२८	पूर्वाहृत (पहले लियाहुआ आहार) आदि पूर्व पुद्गलभङ्गों का निरूपण	२०८–२१०
२९	पूर्वाहारितादि पुद्गलोंका निरूपण	२११–२१३
३०	नारकजीवों के पुद्गलभेदका निरूपण	२१४–२१६
३१	पुद्गल सूत्रका वर्णन	२१७–२२२
३२	प्रकृतिका अपरिवर्तनादिका वर्णन	२२३–२२४
३३	कर्मपुद्गलविषयका निरूपण	२२५–२३३
३४	कर्मबंधका निरूपण	२३४–२४१
३५	असुरकुमारादि वक्तव्यताका निरूपण	२४२–२४८
३६	नारकियों के आहारादिका वर्णन	२४९–२५३
३७	नागकुमार वक्तव्यताका निरूपण	२५४–२५८
३८	पृथिवीकायिकादि जीवोंका निरूपण	२५९–२६४
३९	पृथिवीकायिकादि जीवोंके आहारादिका वर्णन	२६५–२७५
४०	द्वीन्द्रिय जीवोंका वर्णन	२७६–२८४
४१	द्वीन्द्रिय जीवोंका आहारादि निरूपण	२८५–२८६
४२	तेइन्द्रिय चतुरिन्द्रिय जीवोंका निरूपण	२८७–२९२
४३	पचेन्द्रिय जीवोंका और उनके आहारादिका निरूपण	२९३–२९७
४४	वानव्यन्तरादिका और उनकी स्थिति आदिका निरूपण	२९८–३०३
४५	आत्मारंभादिका वर्णन	३०४–३१४
४६	नैरयिकोंकी आत्मारम्भादि वक्तव्यताका निरूपण	३१५–३२५
४७	ज्ञानादि वक्तव्यताका निरूपण	३२६–३३३
४८	असंवृत अनगारका निरूपण	३३४–३४५
४९	संवृत अनगारका निरूपण	३४६–३५३
५०	असंयत जीवों के अधिकारका निरूपण	३५४–३६४
५१	वानव्यन्तर देवों के स्वरूपका निरूपण	३६५–३७२
	द्वितीय उद्देशकका प्रारंभ	
५२	द्वितीय उद्देशक के विषयोंका निरूपण	३७३–३७७
५३	राजगृह नगरमें समवसरणका निरूपण	३७८–३८३
५४	कृतकर्म भोगनेका निरूपण	३८४–३९०

५५	नारक जीवोंके स्वरूपका निरूपण	३९१–४०२
५६	नारकजीवोंके कर्म वर्णादि विषयका निरूपण	४०३–४२२
५७	असुरकुमारादि वक्तव्यताका निरूपण	४२३–४३६
५८	पृथिवीकायिकादि चतुरिन्द्रियान्त जीवोंका निरूपण	४३७–४४६
५९	पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जोवोंका निपरूण	४४७–४५२
६०	मनुष्योंके आहार आदिका निरूपण	४५३–४६१
६१	देवोंके आहार आदिका निरूपण	४६२–४६४
६२	सलेश्य जीवोंके आहार आदिका निरूपण	४६५–४७७
६३	लेश्याके स्वरूपका निरूपण	४७८–४८१
६४	संसारसंस्थान कालका निरूपण	४८२–४९९
६५	अन्तक्रिया (मोक्षविचार) का निरूपण	५००–५०१
६६	उपपात प्रकरणका निरूपण	५०२–५२२
६७	असंज्ञी जीवोंकी आयुका निरूपण	५२३–५३३
	तृतीय उद्देशकका प्रारंभ	
६८	तृतीय उद्देशक के विषयोंका संक्षेपसे निरूपण	५३४–५३६
६९	कांक्षामोहनीय कर्मका निरूपण	५३७–५६५
७०	जिनोदितके सत्यत्वका प्रतिपादन	५६६
७१	भगवद्वाक्य के श्रद्धापूर्वक आराधकत्वका निरूपण	५६७–५६८
७२	'अस्तित्व नास्तित्व आदिका निरूपण	५६९–५८२
७३	'अत्रेहादिगमनीयका निरूपण	५८३–५८४
७४	कांक्षामोहनीयकर्म बन्धके स्वरूपका निरूपण	५८५–५९८
७५	कांक्षामोहनीय कर्मके उदीरणादिके स्वरूपका वर्णन	५९९–६२२
७६	नारकीय जीवोंके कांक्षामोहनीय कर्मके वेदनादिके स्वरूपका निरूपण	६२३–६३१
७७	श्रमणके विषयमें कांक्षामोहनीयकर्मके वेदनका स्वरूप	६३२–६६१
	चतुर्थ उद्देशक प्रारंभ	
७८	चतुर्थ उद्देशककी अवतरणिका	६६२–६६३
७९	कर्मप्रकृति के स्वरूपका निरूपण	६६४–६६८
८०	उपस्थानापक्रमण (स्वीकार करना और हटना) के स्वरूपका-निरूपण	६६९–६८९

८१	कर्मके वेदन किये विना उससे मोक्ष (छुटकारा) नहीं होनेका-कथन	६९०–७०१
८२	पुद्गल विचारका निरूपण	७०२–७०९
८३	छद्मस्थादिकोंका सिद्धि प्रकरण	७१०–७२९
	पांचवाँ उद्देशक प्रारंभ	
८४	पांचवाँ उद्देशकका विषय कथन	७३०
८५	नारकादि (२४) चोईस दण्डकोंके आवासोंका निरूपण	७३१–७४५
८६	२४ चोईस प्रकार के दण्डकोंमें स्थितिस्थानका निरूपण	७४६–७६८
८७	रत्नप्रभामें स्थितिस्थानका निरूपण	७६९–७८१
८७	रत्नप्रभामें अवगाहना स्थानका निरूपण	७८२–७८८
८८	रत्नप्रभा पृथिवीमें स्थित नारकीय जीवोंके शरीर आदिका-निरूपण	७८९–७९४
८९	रत्नप्रभा पृथिवीके नरकावासमें स्थित नारकजीवों के शरीर-संहनन (अस्थिरचना) का निरूपण	७९५–८०१
९०	रत्नप्रभामें स्थित नारक जीवोंकीं लेश्याका निरूपण	८०२–८०५
९१	रत्नप्रभामें स्थित नारकजीवोंके दृष्टिद्वारका निरूपण	८०६
९२	,, ,, ज्ञानद्वारका निरूपण	८०७–८१०
९३	रत्नप्रभालेश्यामें योगद्वारका निरूपण	८११–८१२
९४	रत्नप्रभालेश्यामें उपयोग द्वारका निरूपण	८१३–८१४
९५	शर्कराादि शेषपृथिवीकी लेश्याका वर्णन	८१५–८१७
९६	असुरकुमारादि के स्थितिस्थानका निरूपण	८१८–८२४
९७	पृथिवीकायिकादि एकेन्द्रिय जीवोंके स्थितिस्थान आदिका-निरूपण	८२५–८३६
९८	द्वीन्द्रियसे चतुरिन्द्रिय तकके जीवोंके स्थितिस्थान आदिका-निरूपण	८३७–८४२
९९	पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवोंके स्थितिस्थान आदिका वर्णन	८४३–८४६
१००	मनुष्योंके स्थितिस्थान आदिका वर्णन	८४७–८५२
१०१	वानव्यन्तर आदिकोंके स्थितिस्थान आदिका वर्णन	८५३–८५६

विषयानुक्रमणिका समाप्त ।